%%A. D. 1190 ― 1435

%%or Śaka 1112 – 1357

%% p. 604

NO. 307

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Siṃhāchalaṃ<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 987; A. R. No. 181-D of 1899)

Ś. 128[2]

(१।) ... ... ... ... ... ... ... ... ...

(२।) ... नरहरे[ः] श्रीसिंहशैलेसितुः । ... ... ... ... ...

(३।) ... तांश्च गंडाभिधां दीनाराम प्रतिपाल्य तत्र सुफलां क-

(४।) ... व्मेदिनी ।। [१] धर्म्माय पडिरायको विमलधी स्वाभीष्टसंसिद्ध-

(५।) ये । श्रीगोकर्न्न महेश्वरस्य गरु[डो]निर्म्मापितो श्रीहरेः [।। २]

(६।) ... शुद्धहृदयै स्स रक्षणीय स्सदा । ... ... ...

(७।) दिवसाधीशावधिर्व्वर्त्ततां । [। ३] शकवरुषवुलु १२८[२] ने टि

(८।) कात्तिक विमल पंचमियुनु गुरुवारमुनांड्ड<2> धर्म्म-

(९।) पडिरायंडु तनकु अभीष्टात्थ[र्थ] सिद्धिगानु श्रीनरसिह्यना-

(१०।) ... ... ... ... ... ...

(११।)... ... ... ... ... ...

(१२।) [लोन] पुट्टेंडु क्षेत्रमुन्नु नमदु [पडि] ...

(१३।) देवरकुं वेट्टेनु । ई धम्मंवु श्री वैष्णव रक्ष

(१४।) मरिन्नि भंडारमंदु ओक माड पेटि मरु-

(१५।) व[वु] तोंटपटु विलिचि पेटेनु । शत्रुणापि कृतो ध-

(१६।) र्म्मः पालनीयो मनीषिभिः ।। शत्रुरेव हि शत्रुःस्या{त्} धर्म्म[ः]

(१७।) शत्रुन्न क्कस्यचित् [।।] श्री श्री श्री [।।]

<1. In the thirty-second niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 15th October, 1360 A.D. Thursday.>